शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2013

वासना और तृष्णा मुक्ति से कारुण्य शक्ति प्रकट होगी विनोबा

ढाई हजार साल पहले बुद्ध का अवतार हुआ। गौतम बुद्ध आज की भौतिक आवश्यकता है। बीच के काल में वह लुप्त-सा हो गया। जो अहिंसा बुद्ध और महावीर ने पेश की और आगे के संतों ने कही, उस अहिंसा से इस युग के सवाल हल होने वाले हैं। इस समय दुनिया को बुद्ध सन्देश की अत्यंत आवष्यकता है। आज दुनिया में असमाधान और अषांति व्याप्त है। सारी दुनिया में कषमकष चल रही है, परस्पर भय बढ़ रहा है। दुनिया पहले कभी इतनी भयभीत नहीं हुई। यह हालत विज्ञान के कारण हुई है। विज्ञान का परिणाम यही होगा कि या तो मानव जाति हिंसा और वैर बढ़ाकर जल्द-से-जल्द अपना खात्मा कर लेगी या हमें अक्ल आ जायेगी और हिंसा के दुष्ट-चक्र से मानवता मुक्त होकर रहेगी। अब बीच की हालत नहीं रह सकेगी। गौतम बुद्ध की करुणा का मूल वासनामुक्ति में है। वासना से छुटकारा पाये बिना करुणा की शक्ति प्रकट नहीं होगी। गौतम बुद्ध ने समझाया कि वासना और तृष्णा सब दुःखों का मूल है। उसे काटना होगा। वासनाक्षय के बिना अहिंसा नहीं चल सकती। यह करुणा गौतम बुद्ध को सूझी। जिस अहिंसा का विचार अनेक संतों ने दिया, वही अब परिपूर्ण जीवन-विचार बन गया है। मतलब वह जीवन की प्रत्येक शाखा को लागू होनेवाला विचार हो गया है। बौद्धावतारे अब प्रारंभ हो गया है। आज सभी हिन्दू किसी धर्म कार्य का संकल्प करते समय बौद्धावतारे वैवस्वत मन्वंतरे कलियुगे आदि मंत्र का स्मरण करते हैं। यानी आज भी हम बुद्ध के जमाने में ही काम कर रहे हैं। बुद्ध भगवान ने स्पष्ट शब्दों में कहा था भाइयो, न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं। अवेरेन च सम्मति एस धम्मो सनन्तनो अर्थात वैर से वैर कभी शांत नहीं होता। यह उनकी षिक्षा का सार है। गौतम बुद्ध का जब दुःख का स्पर्ष हुआ तब वे राजमहल से निकल पड़े। दुःख का विनाष कैसे हो ? इसका मार्ग ढूंढते हुए वे चिंतन करते रहे। आखिर उन्होंने चालीस उपवास किए। चालीस दिन के चिंतन से उन्हें अंतःप्रकाष दीख पड़ा, उन्होंने देखा कि कारुण्य का उदय हो रहा है। यह है दर्षन! उन्हें उत्तर मिला कि, "दुनिया का दुःख अगर मिटाना है तो कारुण्य की जरूरत है।" जब उन्होंने आंखें खोलकर पूरब की ओर देखा, तो वहां मैत्री का, पष्चिम की ओर देखा तो करुणा का, दक्षिण की ओर देखा तो मुदिता का और उत्तर की ओर देखा तो उपेक्षा का दर्षन हुआ। फिर वे दुनियाभर में यह कहते घूमे कि 'जगत दुःखमय है और दुःख-परिहार के साधन चार हैं - मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा।'

बुद्ध को पहलेशिष्य के रूप में पिताजी मिले। इस तरह उन्होंने दुःख निवारण का काम राजमहल से शुरू किया। उन्होंने लोगों को समझाया कि तुम दूसरों को दुःखी बनाकर सुखी नहीं हो सकते। बुद्ध भगवान को एक विचार सूझा और उन्होंने अपने सब साथियों एवं शिष्यों को आदेश दिया कि भिक्षुओं निकल पड़ो। 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' निकल पड़ो, घूमो। भिक्षु और यति घर तोड़कर जाते थे। इस तरह तोड़ने की शक्ति जब तक हममें नहीं आती, तब तक काम नहीं होगा। जब तक मनुष्य सोचेगा कि पुराने दस-पांच कामों के साथ एक यह भी नया उठा लूं तो क्रांति नहीं हो सकती। समर्थ विचार जहां फैलाना होता है, वहां

ISSN 2320 – 0871
17 जून 2013

तोड़ने की ताकत चाहिए। इसीको 'संन्यास' कहते हैं।

लोकजीवन में सुधार, परिवर्तन, लोगों में क्रांति लाना आदि काम सरकारी शक्ति से नहीं हो सकता। अगर राजनीति के द्वारा काम होनेवाला होता तो महात्मा गौतम बुद्ध राजपुत्र ही थे! राज्य के द्वारा सब काम हो सकता तो वे राज्यसत्ता क्यों छोड़ते ? वहीं रहकर काम कर सकते थे। अगर वे राजनीति के पचड़े में पड़ते तो उन्हें कौन याद करता ? दूसरी मिसाल है राजा अशोक की। अशोकबहुत बड़े राजा हो गये। उन्होंने काफी राज्य प्राप्त किया। अगर वे मरने तक राज्य ही करते रहते तो कोई उनको याद नहीं करता। पर वे राज-काज छोड़ लोकसेवा में लग गये। इसलिए अशोक को लोग आज भी याद करते हैं। जो धर्म दुनिया में और विचार में क्रांति लाने वाला है, वह राजसत्ता के जरिये फैल नहीं सकता। इसलिए बुद्ध भगवान को राज्य छोड़ना पड़ा। जब से बुद्धधर्म को राज्यशक्ति का बल मिला, तब से बुद्ध धर्म के उखड़ने की तैयारी हुई। जब से राजसत्ता धर्म के साथ जुड़ गई, तब से धर्म की अत्यंत हानि हुई है। राजसत्ता के जरिये सद्विचार या सद्धर्म फैल सकता है, यह कल्पना ही मन से निकालना होगी। बल्कि अगर सच्चे अर्थ में राजसत्ता धर्म के साथ जुड़ जाये तो धर्म राजसत्ता को ही खतम कर देगा। दोनों एक साथ नहीं रहेंगे। धर्म अगर सचमुच राजसत्ता के साथ आ गया तो वह राजसत्ता को तोड़ देगा। दूसरों पर सत्ता चलाना धर्म विचार नहीं।

प्रस्तोता : श्वेत दुबे